“हैं तैयार हम”

राजस्थान में आंगनवाडी और डे केयर सेंटर फिर शुरू: गाइडलाइन जारी

*पहला मामला:*भूपेन और सुनीता पहली बार अभिभावक बने थे। उन्होंने अपनी बेटी ख़ुशी को मार्च २०१९ में पास ही के प्री-प्राइमरी स्कूल में भर्ती करवाया ही था कि कोविड के चलते लॉक-डाउन लग गया। स्कूल खुलने के १ महीने में ही बंद हो गए। इसके बाद ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हुई किन्तु ख़ुशी, जो कि केवल २.५ साल की थी,के लिए ऑनलाइन कक्षाएं लेना मुश्किल हो रहा था। हालाँकि भूपेन और सुनीता इन्टरनेट के माध्यम से शाला पूर्व शिक्षा की अवधारणा को समझ रहे थे और उस को अप्लाई करते हुए ख़ुशी को घर पर पढ़ा रहे थे, किन्तु उन्हें सबसे बड़ी चिंता थीकि बच्चे अपने हमउम्र बच्चों के साथ रहकर जो सीखते हैं, उस से उनकी बेटी वंचित है।

दूसरा मामला: भंवरी और रूपसिंह की बेटी माही ३ साल की है और अभी तक कभी आंगनवाडी केंद्र नहीं गयी। कोविड-१९के चलते केंद्र बंद थे। आज वह आंगनवाड़ी केंद्र की शाला पूर्व शिक्षा से वंचित है।भंवरी की मुख्य चिंता है कि कहीं इस वजह से माही के आने वाले जीवन पर कोई नकारात्मक असर न पड़े !

कोविड के चलते हमारी ज़िन्दगी में आये बदलावों पर हम पिछले काफी समय से अलग- अलग मंचों पर बात कर रहे हैं, पढ़ रहे हैं और चर्चाएं भी कर रहे हैं किन्तु इस महामारी के चलते थमी ज़िन्दगी के बीच ५ साल तक के बच्चों की शिक्षा और विकास में आये अवरोधों पर कोई ख़ास बातें नहीं हो पाई।

५ साल तक के बच्चे अपने घर की बजाय आस-पास के परिवेश और हमउम्र बच्चों के साथ रहकर ज्यादा सीखते हैं। कोविड ने जहाँ परिवेश को लॉक कर दिया वहीँ वे स्थान जहाँ बच्चे अन्य बच्चों के बीच रह सकते थे, उन्हें भी बंद कर दिया। बच्चे घरों में कैद हो गए। उनके सीखने के अधिकांश रास्ते बंद हो गए। अधिकांश अभिभावक भी बच्चों को सकारात्मक माहौल नहीं दे पा रहे थे क्योंकि वे खुद कोविड-१९ से प्रभावित हुई ज़िन्दगी के बीच जूझ रहे थे।अभिभावक चाहते थे कि उनके बच्चे भी घरों से बाहर निकले किन्तु घर से बाहर पार्क, आंगनवाड़ी केंद्र, प्री प्राइमरी स्कूल, डे केयर सेंटर आदि सब बंद थे।

दूसरी लहर के बाद धीरे धीरे सब कुछ खुल रहा था कि ओमिक्रेन वेरिएंट के चलते एक बार फिर से लॉकडाउन की आशंका होने लगी थी। पर पार्क के समय आदि पर कोई रोक नहीं लगी। केंद्र और स्कूल अभी भी बंद ही थे। लगभग २ साल से आंगनवाड़ी केंद्र और प्री- प्राइमरी स्कूल बच्चों की शक्ल देखने को तरस गए थे।१० फ़रवरी २०२२ को राज्य सरकार की गाइडलाइन में तमाम रोकथाम हटा ली गयी। स्कूल, कॉलेज, सिनेमा हाल सब कुछ पूरी तरह से खोल दिए गए थे, वहीँ शाला पूर्व शिक्षा केन्द्रों के लिए उस गाइडलाइन में कुछ स्पष्ट निर्देश नहीं था। ऐसे में आंगनवाड़ी केंद्र संचालिकाएं और स्कूल प्रबंधन दुविधा में थे। हालाँकि वे विभिन्न सोश्यल मीडिया माध्यमों से अभी भी अभिभावकों के संपर्क में थे, किन्तु बच्चों को केंद्र तक बुला नहीं पा रहे थे।

कोविड-१९ के कम होते असर के बीच यह उम्मीद थी कि अब जल्दी ही छोटे बच्चों के शिक्षा केंद्र शुरू कर देने चाहिए। इसी दौरान तमाम मुद्दों पर विचार करते हुए तथा विशेषज्ञों की सलाह लेकर निदेशालय, समेकित बाल विकास सेवाएं (आईसीडीएस) ने आखिरकार २२ फ़रवरी२०२२ को आदेश और निर्देशिका जारी कर आंगनवाड़ी केंद्र खोलने के निर्देश जारी कर दिए।

केंद्र खोलने के आदेश जारी: आयुक्त, आईसीडीएस की ओर से २२ फ़रवरी २०२२ को जारी आदेशानुसार सभी आंगनवाडी केंद्र पूरी क्षमता के साथ खोले जाने को कहा गया है। आदेश के अनुसार केंद्र परिसर में स्वास्थ्य और सुरक्षा के दृष्टिगत साफ़-सफाई, स्वच्छता, सेनिटाईजेशन की सुनिश्चितता, केंद्र परिसर में आंगनवाडी कार्यकर्त्ता, सहायिका , आशा सहयोगिनी और अन्य आगंतुकों सभी के लिए अनिवार्यतः मास्क लगाने, सामाजिक दूरी , नियमित रूप से हाथ धोने सहित चिकित्सा-स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी गाइडलाइन के अनुसार पालन करते हुए केंद्र संचालन के निर्देश जारी किये गए हैं।

इसी के साथ कोविड सम्बन्धी आवश्यक दिशा निर्देश को केंद्र के अन्दर और बाहर चस्पा करने के भी निर्देश है। केंद्र स्टाफ के लिए कोविड टीके की दोनों डोज़ अनिवार्य की गयी है। ६५ साल से अधिक आयु के व्यक्तियों, सर्दी जुकाम या अन्य किसी बीमारी से ग्रस्त व्यक्तियों को केंद्र आने की मनाही है। ऐसे व्यक्ति अगर केंद्र के लाभार्थी है तो गाइडलाइन के अनुसार लाभार्थियों के घर लाभ पहुंचाने के निर्देश है।

सभी सुविधाएं होंगी नियमित: केंद्र पर शाला पूर्व शिक्षा संचालन के स्पष्ट निर्देश जारी किये गए हैं। इसके लिए कार्यकर्त्ता को कहा गया है कि विभाग के नियमित कलेंडर और उमंग- तरंग- किलकारी पुस्तिकाओं के सहयोग से नियमित ४घंटे शाला पूर्व शिक्षा सत्र आयोजित किये जाएँ। अभिभावकों की सहमतिके अनुसार ही केंद्र पर बच्चों को बुलाने का प्रावधान रखा गया है। इसके लिए अभिभावकों से लिखित में सहमति लेने का प्रावधान रखा गया है। मोबाइल के माध्यम से अभिभावकों को शाला पूर्व शिक्षा के अध्यायों से सम्बंधित वीडियों/ ऑडियो सामग्री नियमित रूप से भेजने और अभिभावकों से गृह-संपर्क के दौरान फोलो-अप लेने को भी कहा गया है।

बच्चों को केंद्र उनकिविकास प्रगति जांच (ग्रोथ मोनिटरिंग) के लिए उनहे एक साथ नहीं बुलाकर एक एक बच्चे को रोस्टर/टर्न निर्धारित करके एक कार्यक्रम/ चार्ट तैयार करके उसके अनुसार बुलाने को निर्देशित किया गया है। इस दौरान हाथ धोना, वज़न मशीन और लम्बाई मापक यंत्र (स्केल) को सेनिटाईज किये जाने को कहा गया है। अतिकुपोषित बच्चों को केंद्र नहीं बुलाकर उनके घर पर ही नियमित स्वास्थ्य जांच और मोनिटरिंग करने तथा घर पर ही पूरक पोषाहार उपलब्ध करवाने को कहा गया है।

कोविड रोगी पहचान होने पर बरती जाए सावधानी: आदेश के अनुसार अगर केंद्र से सम्बंधित कोई कर्मी या बच्चा या लाभार्थी कोविड से संक्रमित पाया जाता है तो उसे चिकित्सा-स्वास्थ्य विभाग की गाइडलाइन अनुसार इलाज और आइसोलेशन के निर्देश है। इस दौरान केंद्र को स्थानीय प्रशासन के सहयोग से सेनीटाईज करवाने को कहा गया है। इस स्थिति में केंद्र को १० दिन के लिए बंद रखने के लिए निर्देशित किया गया है।

खुश है अभिभावक और केंद्र कर्मी:बर्नाड वेन लीयर फाउंडेशन और नगर निगम उदयपुर के सहयोग से इकली साउथ एशिया और इकोरस के साझे में संचालित **अर्बन-९५- द्वितीय चरण परियोजना टीम** ने इस अवसर पर कुछ अभिभावकों और आईसीडीएस कर्मियों से बात की। अभिभावकों ने बताया कि लगातार २ सालों से घर में कैद रहने से छोटे बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास पर काफी बुरा असर पड़ रहा था। चूँकि इस उम्र के बच्चों का मस्तिष्क तेज़ी से विकसित हो रहा होता है, ऐसे में बच्चों के साथ इस समय सबसे ज्यादा समय देने, उन्हें घर-परिवेश में सीखने- सिखाने के अवसर देना और आंगनवाड़ी भेजना ज़रूरी होता है। ऐसे में केंद्र खुलने से निश्चित ही बच्चों के लिए यह समग्र विकास का एक अच्छा अवसर होगा।

उदयपुर के लोहार बस्ती,आयड आंगनवाडी केंद्र की संचालिका अनीता के अनुसार उन्हें अपने केंद्र के दरवाज़े बच्चों के लिए फिर से खोलने में बहुत ख़ुशी हो रही है। उनके अनुसार अब केंद्र फिर से बच्चों की किलकारी से चहक और महक उठेंगे। शहर के ही प्री-स्कूल प्रबंधन के अनुसार वे भी अब विभाग के आदेशानुसार स्कूल खोलने को तैयार हैं। वे मार्च प्रथम सप्ताह से बच्चों को स्कूल बुलाना शुरू कर रहे हैं।हालाँकि वे भी अभिभावकों की लिखित सहमति से ही बच्चों को बुलाएँगे।

बहरहाल भूपेन, सुनीता, रूप सिंह और भंवरी जैसे अभिभावक काफी खुश है। अब ख़ुशी और माही जैसे बच्चे अपने हमउम्र बच्चों के साथ आंगनवाड़ी केंद्र और प्री-प्राइमरी स्कूल जा पाएंगे और जब वे वापस लौटेंगे तो वे बच्चों के साथ उनसे केंद्र में हुई सारी गतिविधियों की विस्तृत बातचीत करेंगे और बच्चों के साथ खूब समय बिताएंगे। सुनीता कहती है, अब शाम को बच्चों को पास के पार्क में वह और ज्यादा वक़्त दे पाएंगी, क्योंकि अब वह राजवीर के साथ उन गतिविधियों को दोहराएगी, जो वह स्कूल में सीख कर आता है।